हमारे अगुवों की ओर से सन्देश

बाधाओं को पार कर सशक्तिकरण का निर्माण

हेरिसबर्ग, पेन्नसिलवेनिया, यूएसए में आयोजित 16वें विश्व सम्मेलन के अवसर पर, धर्मविज्ञान का अध्ययन कर रही महिलाओं को सहयोग प्रदान करने वाली संस्था *एनी ज़ेरनिके फण्ड* के प्रतिनिधिगणों ने श्रीमती सिंथिया पीकॉक का उनकी अग्रगामी सेवकाई के लिए सम्मानित किया, और उन्हें ''बहुतों के लिए प्रेरणा का एक स्त्रोत'' कहा। फोटोः हाइक मार्टिन

विज्ञप्ति जारी करने की तारीख: मंगलवार, 2 जनवरी, 2018

क्षेत्रीय प्रतिनिधि सिंथिया पीकॉक की गवाही

सीमाएं, बाधाएं, रोक, सेतु, और सशक्तिकरण मेरे जीवन की वास्तविकताएं रहीं हैं। इन वर्षों में मैंने चुनौतियों का सामना करना और मानसिक रूप से और विश्वास में अधिक सशक्त होना सीखा है।

भारत के मसीही समुदाय ने स्त्रियों को शिक्षा का अवसर देने में और इस धारणा से मुक्ति देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाया है कि स्त्रियों की कोई पहचान नहीं होती।

परन्तु ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं को अभी बहुत कार्य करना है कि महिलाओं और पुरुषों को एक साथ सहकर्मियों के रूप में जोड़ सके, सब लोगों के बीच परमेश्वर के राज्य का विस्तार कर सके, और समाज, परिवार, व कलीसिया को योगदान देने के लिए अपनी सारी क्षमता का उपयोग कर सके।

पिछले नौ वर्षों में, मैं एमडब्ल्यूसी के साथ जुड़ी हुई हूँ, पहले मैं एमडब्ल्यूसी के डीकन कमीशन में सेवाएं दे रहीं थीं, और अब क्षेत्रीय प्रतिनिधि के रूप में एमडब्ल्यूसी के साथ हूँ। मैं एमडब्ल्यूसी की सेवकाई को बढ़ावा देती हूँ ताकि हमारी सारी कलीसियाएं, विशेष कर ऐसी कलीसियाएं जो सुदूर स्थानों में हैं और जो अक्सर स्वयं को अकेली और उपेक्षित महसूस करती हैं, यह जान सकें कि वे एक ऐसी विश्वव्यापी देह की अंग हैं जो उनकी चिन्ता करती है, उनके लिए प्रार्थना करती है, और उनसे प्रेम रखती है।

अपनी इस भूमिका को पूरी करने के लिए मुझे पुरुष अगुवों के साथ भी कार्य करना पड़ता है। यह समझ स्थापित करने के लिए कि मैं उनके लिए कोई खतरा नहीं परन्तु मसीह में एक बहन हूँ मुझे एक लम्बे दौर से गुजरना पड़ा है।

भरोसा का सम्बन्ध कायम करने में समय, प्रयास, और बाधाओं को पार करने के लिए धीरज की आवश्यकता होती है। कुछ मामलों में, मुझे ऐसा लगता है कि मैं असफल हो गई, परन्तु मैं बातचीत करने के लिए अवसरों को ढूंढ़ना जारी रखती हूँ। मैं परिवर्तन को देखने के लिए विश्वास और आशा बनाए रखती हूँ।

एमसीसी के साथ 38 वर्षों की अपनी सेवा में, मैं अपनी ऐनाबैपटिस्ट कलीसियाओं से जुड़ गई और मुझे ऐसी महिलाओं से बातचीत करने का अवसर मिला जो कलीसिया में अपने वरदानों और प्रतिभाओं का उपयोग करने में संघर्ष कर रही हैं।

कुछ साहसी बहनों ने 1970 के दशक के आरम्भ में ऑल इण्डिया मेनोनाइट वर्ल्ड कॉफ्रेंस की स्थापना की। हम थियोलॉजिकली ट्रेंड ऐनाबैपटिस्ट विमेन ऑफ इण्डिया को स्थापित करने का भी कार्य कर रहे हैं, जो ऐसी बहनों के लिए है जिन्हें उनकी कलीसियाओं में सेवकाई के पर्याप्त अवसर नहीं मिल रहे हैं।

हमने धैर्य बनाए रखा है – नैतिक और आर्थिक सहयोग के लिए स्वीकार्यता के मार्ग में बाधाओं के बावजूद – और हमें यह भरोसा है कि एक दिन हमारा परिश्रम फल लाएगा।

मैंने अपनी मण्डली, टोल्लीगुंगे क्रिश्चन फैलोशिप की महिलाओं को परिवर्तन लाते देखा है।

इस कलीसिया की महिलाओं ने आत्मिक और सामाजिक असर छोड़ा है और इस समझ में भी बढ़ती गई हैं कि महिलाओं के रूप में किस प्रकार से सेवकाई करना है। एक महिला ने ही इस कलीसिया में मुट्ठी भर कुछ बच्चों को लेकर सण्डे स्कूल आरम्भ किया और अब यहाँ 100 से भी अधिक बच्चे आ रहे हैं। महिलाएं अब एक ऐसी संस्कृति में प्रचार करने लगी जो तब भी पुरुष प्रधान था। महिलाएं आराधना में अगुवाई करती हैं और कलीसिया के सारे बड़े निर्णय महिलाओं को साथ लेकर लिए जाते हैं।

अन्त में, मैं अपनी गवाही देना चाहती हूँ। विवाह के 10 दिन बाद से ही मेरा वैवाहिक जीवन बिखरने लगा। परमेश्वर का भय मानने वाली अपनी माता से मैंने यह सीखा था कि कलीसिया में पति और पत्नी के द्वारा एक दूसरे से की गई प्रतिज्ञा का आदर करना आवश्यक है, मैं धीरजपूर्वक पाँच वर्ष के लम्बे समय तक दीन बन कर दुर्व्यवहार झेलती रही।

एक रात जब मेरा सामना मृत्यु से हुआ, तो मैं सारी निन्दा को भूल गई और अपने बेटे के लिए एक जोड़ी कपड़े और दूध लेकर और गर्भ में पल रही अपनी बेटी को लेकर घर छोड़ दिया।

बहुत से संघर्षो का सामना करने के बाद, मुझे यह समझने की शक्ति मिलने लगी कि एक मसीही होने का अर्थ क्या होता है और आगे बढ़ने लगी। मैं अपने नजदीकी रिश्तेदारों और एमसीसी के भाई बहनों के प्रति धन्यवादी हूँ कि उन्होंने मुझे दोषी जाने बिना मेरा साथ दिया। उन्होंने मुझे यह सिखाया कि बाधाओं को किस तरह से पार करना है और किस प्रकार से प्रेम और आपसी समझ के सेतु का निर्माण करना है। मैं मजबूत और सख्त होती गई, परन्तु अपने वरदानों का उपयोग करने पर मैंने धीरज धरना भी सीखा।

मैं भय, संकोच, और हीन भावना को स्वयं से दूर कर सकी। जब मुझसे मेरे विषय में पूछा जाता तो मैंने निडर हो कर अपनी इस गवाही को बताया, परन्तु सावधानी भी रखा, क्योंकि मैं नहीं चाहती थी कि कलीसिया के साथ मेरे कार्य पर कोई जोखिम आए। ''मुझ से अलग हो कर तुम कुछ भी नहीं कर सकते'' (यूहन्ना 15:5ब) और ''जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूँ'' (फिलि. 4:13) मेरे जीवन का हिस्सा बन चुके हैं जब मैं बाधाओं का सामना करती हूँ।

मैं परमेश्वर पिता का और उन सभों का धन्यवाद करती हूँ जिन्होंने मुझे मेरे जीवन के सबसे अंधकारमय समय में प्रोत्साहन, सहयोग, परामर्श, प्रेरणा दिया और मेरे साथ खड़े रहे। अब यह मेरा कर्तव्य है कि मैं भी उन्हीं के समान बन सकूं और अपनी सारी क्षमता के साथ ऐसा ही दूसरों के लिए भी कर सकूं।

– सिंथिया पीकॉक के द्वारा जारी मेनोनाइट वर्ल्ड कॉंफ्रेंस की एक विज्ञप्ति।